www.thearyasamaj.org

जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष - ५५ अंक - ८
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १००) रु०
आजीवन - १०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

श्रावण : सम्वत् २०७० वि० अगस्त, २०१३

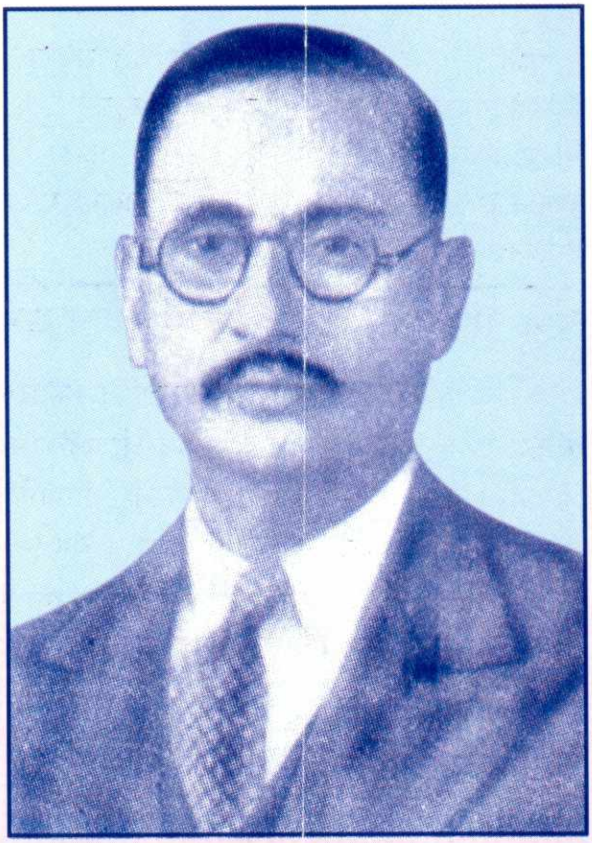

श्री बिष्णुदासजी बांसल

www.thearyasamaj.org

श्री विष्णुदासजी बांसल :

श्री विष्णुदासजी बांसल पंजाब के रहने वाले थे । कलकत्ता आकर उन्होंने ऊषा फैन का निर्माण आरम्भ किया और व्यवसायी के रूप में प्रतिष्ठित हो गये । सन् १९१९ ई० में जब आर्यसमाज कलकत्ता का पंजीकरण हुआ था, उस समय श्री विष्णुदासजी बांसल आर्यसमाज कलकत्ता के मन्त्री थे। सन् १९३५ ई० में जब आर्य कन्या विद्यालय की प्रबन्धक समिति ने आर्य महिला-शिक्षा-मण्डल ट्रस्ट बनाया था उस समय श्री विष्णुदासजी बांसल आर्य समाज की ओर से निर्वाचित सात सदस्यों में प्रथम थे । उस समय श्री बांसलजी आर्यसमाज कलकत्ता के प्रधान थे । मण्डल की जो प्रथम संचालक समिति बनी थी उसके प्रधान सेठ दीपचन्दजी पोद्दार और मन्त्री श्री विष्णुदासजी बांसल थे । सन् १९३५ ई० में जब आर्य विद्यालय की स्थापना का संकल्प लिया गया उसमें भी श्री विष्णुदासजी बांसल का योगदान प्रमुख था । इस प्रकार श्री बिष्णुदासजी बांसल १५—२० वर्षों तक आर्यसमाज कलकत्ता में अधिकारियों में बड़े मुख्यरूप से दिखाई पड़ते हैं । व्यावसायिक दृष्टि से ये बड़े सफल व्यवसायी थे । । इसका निवास स्थान आर्य महिला-शिक्षा-मण्डल ट्रस्ट की सूचना के अनुसार २५ नं० लैन्सडाउन रोड, कलकत्ता दिया हुआ है । श्री बांसलजी का योगदान मन्दिर-निर्माण, कन्या महाविद्यालय का संचालन और आर्य विद्यालय का संचालन सभी कार्यों में बड़ी उदारता से मिलता रहता था । स्वर्ण-जयन्ती-वर्ष में श्री बांसलजी आर्यसमाज कलकत्ता के प्रधान थे ।

साधारण-सभा का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

आर्य समाज कलकत्ता १९, विधान सरणी कोलकाता-६ की वार्षिक साधारण सभा दिनांक ७ जुलाई २०१३ रविवार को आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में **प्रधान-श्री मनीराम आर्य जा** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । जिसमें आर्य समाज कलकत्ता तथा संबंधित संस्थाओं / विभागों का वार्षिक कार्य-विवरण एवं आय-व्यय विवरण सम्बंधित अधिकारियों ने प्रस्तुत किया । वर्ष २०१३-२०१४ के लिए पदाधिकारियों एवं अन्तरंग-सभा के सदस्यों का निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ ।

प्रधान : श्री मनीराम आर्य ।

उप-प्रधान : श्री अमर सिंह सैनी, श्री ध्रुवचन्द जायसवाल, दीपक आर्य ।

मंत्री : श्री सत्यप्रकाश जायसवाल

उप-मंत्री : श्री शिवकुमार जायसवाल, श्री अजय गुप्ता (एडवोकेट), श्री आनन्द प्रकाश गुप्त ।

कोषाध्यक्ष : श्री मदनलाल सेठ ।

हिसाब-परीक्षक : श्री विनय कुमार आर्य ।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री छोटेलाल सेठ, श्री सत्येन्द्र जायसवाल ।

यज्ञ-व्यवस्था : श्री लक्ष्मीकान्त जायसवाल, श्री सुरेश चन्द जायसवाल । (शेष पृष्ठ ६ पर)

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५५ अंक – ८

श्रावन-भाद्रपद-२०७० वि०
दयानन्दाब्द १८९
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४

अगस्त– २०१३

मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

सम्पादक :
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय, एम. ए.

सह सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्य प्रकाश जायसवाल
पं० योगेश राज उपाध्याय

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज की गतिविधियाँ — २
२. इस अंक की प्रस्तुति — ३
३. कल्याण का पथ — ४
४. महर्षि वचन सुधा-२३ -प्रो० उमाकान्त उपाध्याय — ७
५. रक्षा बन्धन, ऋषि तर्पण -प्रो० उमाकान्त उपाध्याय — ९
६. जीवन चरित लेखन में मेरा योगदान -डॉ० भवानीलाल भारतीय — १२
७.बड़ों का अपमान और आत्म प्रशंसा दोनों निंदनीय हैं -प्रो० ओमकुमार आर्य — १५
८.खुल गई गाँठ जुड़ गया प्रेम का धागा -श्री देवनारायण भारद्वाज — १९
९. छत्रपति शिवाजी का राज्याभिषेक और व्यक्तित्व दर्शन -प्रा० चन्द्रशेखर लोखण्डे — २२
१०.प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, शिक्षाविद्, कर्मठ आर्य नेता, राज्यसभा सांसद -डॉ० रामप्रकाशजी कुलाधिपति — २४
११. एक पत्र -श्री आदित्य मुनि 'वानप्रस्थ' — २७

आर्य समाज कलकत्ता
१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६, दूरभाष : २२४१-३४३९
email : aryasamajkolkata@gmail.com

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है ।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

www.thearyasamaj.org

कल्याण का पथ

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ।। ऋग् ५-५१-१५

शब्दार्थ :–

स्वस्ति	= सु+अस्ति= कल्याण	पुनः	= और, फिर
पन्थाम्	= पथ को	ददता	= दानशील
अनुचरेम	= अनुसरण करें	अघ्नता	= अहिंसक स्वभाव वाले
सूर्याचन्द्रमसौ	=सूर्य और चन्द्रमा	जानता	=जानने वाले
इव	=समान, उसी तरह	संगमेमहि	=साथ चलें

भावार्थ :– हम अपने जीवन में सूर्य और चन्द्रमा की तरह कल्याण के मार्ग का अनुसरण करें और हम जीवन पथ में दानशील, ज्ञानी और अहिंसक लोगों के साथ चलें ।

व्याख्यान विन्दु :

१. **स्वस्ति-कल्याण क्या है ? श्रेय का मार्ग ।**
२. **चरण और अनुसरण में भेद ।**
३. **सूर्य चन्द्र की तरह--सूर्य प्रकाश, ऊर्जा, उत्थान, प्राण का स्रोत, चन्द्रमा पोषक, रस, आह्लादकता का स्रोत ।**
४. **जीवन में साथी, संगमन, समाज का महत्त्व ।**
५. **दानी, ज्ञानी, अहिंसक साथी का महत्त्व ।**

व्याख्या

स्वस्ति का अर्थ है, सु+अस्ति; और सु=अच्छा, भला, कल्याण, अस्ति=है । सो स्वस्ति का अर्थ हुआ अच्छा है, कल्याण है। इस प्रकार स्वस्ति पन्था का अर्थ हुआ कल्याण का मार्ग ।

इस मंत्र का मूल भाव प्रार्थना का है । भक्त भगवान् से प्रार्थना करता है कि प्रभु ! हमें कल्याण के पथ पर अनुगमन की प्रेरणा दीजिये । जैसे सूर्य और चन्द्रमा अपने निर्धारित पथ पर चलते रहते हैं उसी तरह हम भी चलें । पुनः प्रार्थना करता है कि हमारी यात्रा में हमारे जो साथी बनें वे दानशील, ज्ञानवान, और अहिंसक वृत्ति के हों।

www.thearyasamaj.org

हम अनन्त के यात्री हैं। हमारी यात्रा ऐसी है कि जिसका न कोई आदि है और न कोई अंत है। वैदिक दर्शनों में जीवन-मरण का चक्र चलता ही रहता हैं। एक वृत्त की तरह जीवन-मरण के चक्र पर हम चलते रहते हैं।

''पुनरपि जननम् पुनरपिमरणम् पुनरपि जननी जठरे शयनम्'' मृत्यु और जन्म का चक्र चलता ही रहता हैं। सेमेटिक सम्प्रदायों में, ईसाई, इस्लामी मतों में जीवन एक सरल-रेखा की तरह है, एक बिन्दु से आरम्भ होता है और किसी दूसरे बिंदु पर जाकर समाप्त हो जाता है। इनके यहां पुनर्जन्म नहीं होता : भारतीय दर्शनों ने पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकार किया हैं।

हमारा जीवन किसलिये है ? इस प्रश्न का उत्तर ऋषियों ने दिया है—'भोगापवर्गार्थं दृश्यम्।' हमारा जीवन भोग द्वारा अपवर्ग की प्राप्ति के लिये है।

हम यात्री हैं, अनन्त हमारी यात्रा है। हम स्वस्ति के पथ पर अनुगमन करना चाहते हैं—गमन नहीं अनुगमन। गमन तो हमसे पूर्व ऋषि-महर्षि कर चुके हैं। हम उन्हीं के दिखाये मार्ग पर अनुचरण—अनुगमन करें।

हमारा मार्ग स्वस्ति अर्थात् कल्याण का हो।

अकृत्वा परसन्तापम्, अगत्वा खल नम्रताम्
असन्त्यज्य सतां वर्त्म, यदल्पं तद वै बहु

हम अपने मार्ग पर चलते हुए न तो परसन्ताप करें। न हम दुष्टों के सामने सिर झुकायें। सज्जनों का मार्ग पकड़कर चलते रहें।

उपनिषद् के ऋषि कहते हैं कि हमारे मार्ग में श्रेय और प्रेय दोनों आते हैं। श्रेय हैं—जो हमारा कल्याण करते हैं, और प्रेय हैं—जो हमको प्यारा लगता है। प्रेय का मार्ग सुखमी जीवन में होता है, और श्रेय तो कल्याण का जीवन है। उपनिषद् के ऋषि कहते हैं कि बुद्धिमान व्यक्ति श्रेय को चुनता है , प्रेय को नहीं—वह शरीर का सुख नहीं, जीवन और आत्मा का कल्याण चाहता है।

मन्त्र में सूर्य और चन्द्रमा का उदाहरण दिया हुआ है। हम सूर्य और चन्द्रमा की तरह कल्याण के मार्ग पर चलें। सूर्य अपने नियमों में दृढ़तापूर्वक बँधा हुआ चलता है। विघ्न-बाधाओं को दबाकर यात्रा करता है, संसार को प्राण, प्रकाश, ऊर्जा और दिशाओं का निर्देश भी करता चलता है। चन्द्रमा आह्लादकता, प्रसन्नता, औषधियों में रस और सुखकारी प्रकाश देता है। हम भी अपने पथ पर निर्विघ्न संसार का कल्याण करते हुए संसार को सुख देते हुए चलें। हम संसार को प्रकाश दें, ज्ञान दें, प्रसन्नता, दें और संसार को जीवन यापन के लिये दिशा भी बता सकें।

मन्त्र में अन्तिम बात यह कही कि हमारे जीवन में साथी तो मिलेंगे ही। अन्ततः मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं, तो साथी तो मिलेंगे ही, वे साथी दानशील हों। दान का एक अलग सुख है। दान तो धन,

www.thearyasamaj.org

रहेगा। साथी हिंसक-वृत्ति के न हों। कभी-कभी स्वभाव से ही लोग हिंसक होते हैं —

कहु रहीम कैसे निभे, केर बेर को संग।
या डोले रस आपने, उनके फाटत अंग।।

भगवान बेर जैसे कटीले साथी न दें। साथी ज्ञानवान हों, जो हमें भी कुछ ज्ञान दे सकें। सो हम कल्याण के पथ पर अच्छे साथियों के साथ यात्रा करें। कहीं केले के पेड़ के पास कटीला बेर का पौधा उग आया। बेर केले को हानि पहुँचाने का मन नहीं रखता, किन्तु हवा के झोंके में अपनी मस्ती में झूमता है और केले के पत्ते फट जाते हैं। हमें बेर जैसे कटीले साथी न मिलें

भक्त भगवान से प्रार्थना करता है कि प्रभो हिंसक लोगों का साथ न देना। जीवन में दानी, ज्ञानी और अहिंसक लोगों की संगत मिले।

साभार : वेद—वीथिका

(शेषांश पृष्ठ २ का)

अन्तरंग सदस्य : श्री श्रीराम आर्य, श्री राजेंद्र प्रसाद जायसवाल, श्री अच्छेलाल सेठ, श्री नन्दलाल सेठ, श्री सुरेश अग्रवाल, श्री राजमणि वर्मा, श्री रणजीत झा, श्री घनश्याम मौर्य, श्रीमती सन्तोष गोयल, श्रीमती कविता अग्रवाल।

अधिष्ठाता आर्य युवा शाखा : श्री विवेक जायसवाल।

प्रतिष्ठित सदस्य : आचार्य पं० उमाकान्त उपाध्याय, श्री विश्वनाथ पोद्दार, पं० आत्मानन्द शास्त्री, पं० नचिकेता भट्टाचार्य, पं० देवनारायण तिवारी, श्री शीतल प्रसाद आर्य, श्री लक्ष्मण सिंह, श्रीमती सरोजिनी शुक्ला।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री द्वारिका प्रसाद जायसवाल, पं० योगेश राज उपाध्याय, श्री अच्छेलाल जायसवाल, श्री आशाराम जायसवाल, श्री हीरालाल जायसवाल, श्रीमती जानकी देवी झा, श्री सन्तोष सेठ, श्री कृष्ण कुमार जायसवाल।

'सृष्टि का प्रयोजन'--यही है जिसमें ईश्वर के सृष्टि निमित्त गुण, कर्म, स्वभाव का साफल्य होना। जैसे किसी ने किसी से पूछा कि नेत्र किस लिये है ? उसने कहा देखने के लिए। वैसे ही सृष्टि करने के ईश्वर के सामर्थ्य की सफलता सृष्टि करने में है और जीवों के कर्मों का यथावत् भोग कराना आदि भी।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

''महर्षि वचनसुधा'' – २३

–प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति ।।१।।

ऋ०।म० १।सू०१६४। मं० २० ॥

शाश्वतीभ्यः समाभ्यः ।।२।।'' –यजु० अ० ४० ।मं० ८ ॥

''(द्वा) जो ब्रह्म और जीव दोनों (सुपर्णा)चेतनता और पालनादि गुणों से कुछ सदृश (सयुजा) व्याप्य-व्यापक भाव से संयुक्त (सखाया) आपस में परस्पर मित्रतायुक्त, सनातन अनादि हैं और (समानम्) वैसा ही (वृक्षम) अनादि मूलरूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात् जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न-भिन्न हो जाता है, वह तीसरा अनादि पदार्थ : इन तीनों के गुण, कर्म, स्वभाव भी अनादि हैं इन (तयोरन्यः) जीव और ब्रह्म में से एक जो जीव इस वृक्षरूप संसार में पाप पुण्य रूप फलों को (स्वादूत्ति अच्छे प्रकार भोगता है और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलों को (अनश्नन्) न भोगता हुआ चारों ओर अर्थात् भीतर-बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है । जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न-स्वरूप तीनों 'अनादि' हैं ।।१।।

(शाश्वतीभ्यः) अर्थात् अनादि सनातन जीवरूप प्रजा के लिये वेद द्वारा परमात्मा ने सब विद्याओं का बोध किया है ।।२।।'' –सत्यार्थ० अष्टम्० समु०

यह प्रमाण एक मौलिक प्रश्न के उत्तर में है । प्रश्न यह है कि इस सृष्टि में क्या ब्रह्म ही एक नित्य पदार्थ है और यह सारा जगत् मिथ्या है ? क्या जीव ब्रह्म ही है ? स्वामी दयानन्द इस प्रश्न का उत्तर ऋग्वेद के इस मंत्र के प्रमाण के द्वारा देते हैं । यह संसार एक वृक्ष है उस पर या उसमें दो सुपर्ण, एक पालन करने वाला और दूसरा पालन पाने वाला दो साथ-साथ सखा हैं । पालन करने वाला परमेश्वर है और पालन पाने वाला जीव है । यह संसार स्वादु पदार्थों से युक्त है । जीवात्मा भोक्ता है और परमेश्वर द्रष्टा फल देने वाला है । इस प्रकार संसार में तीन पदार्थ नित्य हो गये । एक परमेश्वर दूसरा जीव और तीसरा यह संसार । संसार अनित्य है । सृष्टि होती है, संसार उत्पन्न होता है और प्रलय होता है । इस प्रकार यह संसार अनित्य है और ब्रह्म तथा जीव दोनों नित्य पदार्थ हैं ।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द जी ने वेद के प्रमाण से यह प्रमाणित कर दिया कि स्वामी शंकराचार्य जी का अद्वैतवाद वेद के प्रमाण के विरुद्ध है । वेद ईश्वर, जीव और प्रकृति को नित्य प्रमाणित कर रहा है ।

स्वामी दयानन्द जी की लिखने की रीति है कि पहले वे प्रमाण देते हैं फिर तर्क द्वारा उसे

www.thearyasamaj.org

अनुमोदित करते हैं । स्वामी जी ने यह प्रमाण दे दिया कि वेद तीन पदार्थों को नित्य मान रहे हैं ।

स्वामी शंकराचार्य का यह कहना है कि यह संसार भ्रम है जैसे रस्सी में साँप का भ्रम हो जाता है वैसे ही इस संसार का भ्रम हो रहा है । वस्तुतः यह मिथ्या है । ब्रह्म को माया का प्रभाव हो जाता है और माया में पड़ा जीव इस संसार को सत्य समझने लगता है ।

एक सीधा सा प्रश्न है कि 'माया' क्या है ? अद्वैतवादी कहते हैं कि माया अनिर्वचनीय मिथ्या है । अब सोचना यह है कि क्या मिथ्या भी कोई प्रभाव डाल सकता है ? अद्वैतवादी कहते हैं कि रस्सी में साँप नहीं है या रस्सी साँप नहीं है, यही भ्रम ब्रह्म के ऊपर आवरण डाल देता और वह जीवात्मा होकर भ्रम में पड़ जाता है । देखना है कि यह कैसा विचित्र तर्काभास हैं ।

भ्रम होने के लिए—(१) वास्तविक रस्सी चाहिये जिसमें भ्रम होता है । (२) भ्रम होने के लिए सर्प (वास्तविक वस्तु) चाहिये जिसका भ्रम होता है । (३) भ्रम करने वाला मनुष्य भी चाहिए । (४) भ्रम के लिए न पूर्ण प्रकाश, न पूर्ण अंधकार अर्थात् जिस व्यक्ति को भ्रम हो वह न तो पूर्ण ज्ञानी हो और न ही पूर्ण अज्ञानी, अतः जिसको भ्रम हो वह कुछ ज्ञानी और कुछ अज्ञानी होना चाहिये । ब्रह्म सर्वज्ञ है पूर्ण ज्ञानी है, इसलिए पूर्ण सर्वज्ञ ब्रह्म को माया का आवेश या भ्रम नहीं हो सकता ।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द ने 'पूर्ण' रूप से अद्वैत वाद का निराकरण करके त्रैतवाद की स्थापना की है । ईश्वर नित्य हैं, पूर्ण हैं, सर्वज्ञ हैं । जीव नित्य है, अपूर्ण हैं, और ज्ञानी, अज्ञानी दोनों है । प्रकृति नित्य है उसी से अनित्य सृष्टि बनती है । सृष्टि और प्रलय प्रकृति में होता है अतः सृष्टि और प्रलय अनित्य तथा प्रकृति नित्य है ।

ईशावास्यम्
पी-३०, कालिन्दी
कोलकाता-७०००८९

फोन (०३३) २५२२२६३६
चलभाष : ०९४३२३०१६०२

आर्य समाज भोगल (जंगपुरा) नई दिल्ली का निर्वाचन सम्पन्न

प्रधान : डॉ जे. पी. गुप्ता

उपप्रधान : डॉ. आभा विरमानी एवं श्री अनिल नागपाल

महामन्त्री : श्री अविनाश चन्द्र धीर

कोषाध्यक्ष : श्री श्रवण कुमार वलेचा

महामन्त्री : आर्य समाज भोगल, (जंगपुरा) नई दिल्ली-१४

मो० ९८११७९१३४०

www.thearyasamaj.org

रक्षा बन्धन, ऋषि तर्पण

–प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

भारतवर्ष की सांस्कृतिक परम्परा में त्योहारों की, पर्वो की, उत्सवों की बहुतायत मिलती है। पूरे वर्ष, बारहों महीने सदा ही कोई न कोई व्रत, त्योहार आता ही रहता है। इन त्योंहारों, पर्वों से जातीय जीवन में प्रसन्नता का, उल्लास का माहौल बना रहता है। जहाँ तक हम सोचते हैं कोई दुखद घटना, मुहर्रमी त्योहार हमारे जातीय परम्परा के पर्वों में याद नहीं आता है। श्रावण मास पूजा-पाठ, धार्मिक कृत्यों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। श्रावण मास की पूर्णिमा श्रवण नक्षत्र से युक्त होती है। इसको श्रावणी पूर्णिमा कहते हैं। श्रावण पूर्णिमा के दिन दो पर्वों की परम्परा है, (१) रक्षाबन्धन या राखी और (२) ऋषि तर्पण, श्रावणी उपाकर्म। प्रस्तुत लेख में दोनों पर्वों का परिचयात्मक वर्णन करने का प्रयास कर रहे हैं।

रक्षा बन्धन या राखी :–रक्षा बन्धन बड़ी प्यारी, सुकुमार भावनाओं का पर्व है। इस पर्व पर बहनें और बेटियाँ अपने भाईयों और पिता की कलाई में रक्षा सूत्र, रक्षा बन्धन बाँधती हैं और इस रक्षाबन्धन का अभिप्राय यह होता है कि भाई या पिता अपनी बहन और बेटी को सुरक्षा देने के लिये आश्वस्त कर देते हैं। आजकल प्रायः बहनें भाईयों को राखी बाँधती हैं। आज के इस सौन्दर्य प्रिय युग में एक से एक सुन्दर राखियाँ बाजार में उपलब्ध हो जाती हैं और बहनें भी चुन-चुनकर अपने प्यार का प्रतीक रक्षा सूत्र, राखी भाईयों की कलाई में बाँधने के लिये बाजार से खरीद लाती है। यह भाई-बहन के अद्‌भुत प्यार का प्रतीक चिन्ह होता है। आजकल पिता को राखी बाँधने की परम्परा काफी कम हो गयी है, फिर भी कहीं-कहीं आज भी पिता को भी राखी बाँधने की परम्परा है। प्रायः करके बहनें व्रत करती हैं पूजा-पाठ, हवन यज्ञ करके अपने भाई को राखी बाँधती है और भाई को मिठाई खिलाती हैं। भाई भी यथाशक्ति बहनों को दक्षिणा देता है और उन्हें सुरक्षा के लिये आश्वस्त भी करता है।

मुंह बोले भाईयों को भी राखी बांधी जाती है। एक ऐतिहासिक सन्दर्भ आता है कि चित्तौड़ गढ़ की महारानी कर्णावती ने मुगल बादशाह हुँमायु को अपनी रक्षा के लिये राखी भेजी थी और हुँमायु ने गुजरात के बादशाह बहादुर शाह से कर्णावती और उसके दुर्ग और राज्य की रक्षा की थी। यह एक ऐतिहासिक बात है। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि रक्षाबन्धन का पर्व कर्णावती-हुँमायु की घटना से आरम्भ हुआ है। रक्षा बन्धन का पर्व ५—६ सौ साल पुराना नहीं है। यह हजारों साल पुराना है। इसका आरम्भ कब से हुआ इसका पता अभी तक निश्चयात्मक रूप से नहीं लगता है। किन्तु यह पर्व हजारों साल पुराना तो है ही।

पुरोहित-यजमान का रक्षा बन्धन :– प्रायः सभी धार्मिक कृत्यों, पूजा-पाठ, याग-यज्ञों में पुरोहित-अपने यजमान की कलाई में रक्षा सूत्र कलावा बाँधते हैं और यजमान अपने पण्डितों-ब्राह्मणों

www.thearyasamaj.org

को दक्षिणा देता है । रक्षा-बन्धन के पर्व पर पुरोहित अपने यजमानों को राखी बाँधते हैं और अपने यजमानों से दक्षिणा तथा संरक्षण प्राप्त करते हैं । यह यजमान-पुरोहित का सम्बन्ध हजारों वर्ष पुराना है और इसका अलग से सांस्कृतिक महत्व है ।

ऋषि तर्पण-श्रावणी उपाकर्म

श्रावणी पूर्णिमा के दिन ऋषि तर्पण-उपाकर्म का पर्व बहुत पुराना है । इसका वर्णन ब्राह्मण ग्रन्थों में भी उपलब्ध हैं । इससे प्रतीत होता है कि ऋषि तर्पण का पर्व महाभारत और रामायण से भी पुराना है । मूल रूप से ऋषि तर्पण का भाव है कि ऋषियों के ग्रन्थों का स्वाध्याय किया जाये । घनघोर वर्षा के दिनों में ऋषि, तपस्वी वनों में सुरक्षित नहीं रहते थे । जीवन का निर्वाह और सुरक्षा कठिन हो जाती थी, इसलिए वानप्रस्थी और ऋषि लोग गाँव नगरों के सुरक्षित और सुविधाकारी स्थानों पर चौमासा करने आ जाते थे । गृहस्थी लोग, ग्राम नगर निवासी इन ऋषि मुनियों के पास वेद, शास्त्र, उपनिषद् आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करते थे और ये ऋषि मुनि लोग भी इन धार्मिक विषयों की कथा या प्रवचन करते थे । श्रावणी पूर्णिमा को यह स्वाध्याय का पर्व आरम्भ हो जाता था और महीनों चलता था । आज कल भी कई साधु, संत, महात्मा नगरों, शहरों में चौमासा करने आ जाते हैं और किसी न किसी रूप में स्वाध्याय प्रवचन का प्रोग्राम भी चलता है, किन्तु यह भी सच है कि वेद, उपनिषद् और दर्शन शास्त्रों की कथा कम हो गयी है । कई जगह समर्थ, सम्पन्न आर्य समाज मन्दिरों में वेद, उपनिषद की कथाएँ होती हैं । कई जगह तो आर्य समाज के मन्दिरों में श्रावणी से जन्माष्टमी तक वेद से पारायण यज्ञ और वेद मन्त्रों की व्याख्याओं की कथा भी होती है । कई और हिन्दू मन्दिरों, देवस्थानों में भगवद् गीता आदि ग्रन्थों की कथा होती है ।

अच्छी सांस्कृतिक परम्परा से सम्पन्न कई संस्कारी लोग ऋषि तर्पण के लिये नदियों या अन्य जलाशयों पर जाकर ऋषियों का नाम लेकर तर्पण करते हैं और पंचगव्य का सेवन करते हैं । किन्तु प्राचीन परम्परा में मुख्य रूप से ऋषि तर्पण के रूप में स्वाध्याय और प्रवचन का विधान है । मनुस्मृति में कहा है —**'स्वाध्यायेन अर्चयेत्‌ऋषीन्'** उपनिषदों में कहा गया है —

'स्वाध्यायान्माप्रमदः' अर्थात् स्वाध्याय में प्रमाद मत करो । और भी कहा है **'स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्'** अर्थात् स्वाध्याय और प्रवचन में प्रमाद नही करना चाहिये ।

स्वाध्याय की गणना तप में की गयी है । **'ऋतं तपः, सत्यं तपः, स्वाध्यायस्तपः ।**

स्वाध्याय करना तप करना है । स्वाध्याय का एक अर्थ है—**'स्वस्य अध्ययनम्'** अपना अध्ययन, अपने जीवन का, अपने क्रिया-कलापों का लेखा-जोखा लेते रहना जैसे समझदार कारबारी अपने कारबार का लेखा-जोखा तलपट बनाते हैं उसी प्रकार समझदार व्यक्ति को अपने जीवन के कार्यों का दैनिक लेखा-जोखा बनाते रहना चाहिये । सन्ध्या पूजा में प्रभु परमेश्वर के शरणापन्न होकर अपने जीवन की पड़ताल होनी चाहिये और प्रभु के समक्ष अपने जीवन को सुन्दर मानवता सम्पन्न बनाने की योजना करनी चाहिये और जीवन को अच्छा, श्रेष्ठ बनाने की प्रार्थना भी करनी चाहिये ।

www.thearyasamaj.org

स्वाध्याय का प्रचलित अर्थ है अच्छे ग्रन्थों का अध्ययन, अध्यापन, कथा, प्रवचन आदि। स्वाध्याय के सबसे अच्छे ग्रन्थ वेद है। वेद के विद्वानों ने जनसाधारण के लिये उपयोगी सीधे सरल जीवनोपयोगी मन्त्रों का व्याख्यान किया है, उन्हें अध्ययन करना बहुत अच्छा है। स्वाध्याय के लिए **'प्रस्थानत्रयी'** के ग्रन्थ बहुत अच्छे हैं। 'प्रस्थानत्रयी' का भाव हम यह समझते हैं कि अपने जीवन का निर्माण करने की यात्रा पर प्रस्थान करने के लिये इन ग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिये और तदनुकूल जीवन का निर्माण करने का प्रयास करना चाहिये। प्रस्थानत्रयी में भगवत गीता, उपनिषद और वेदान्त दर्शन को गिना जाता है। जीवन निर्माण और स्वाध्याय के लिये भगवत गीता उत्तम ग्रन्थ है इसका दैनिक स्वाध्याय करना बहुत अच्छा है। उपनिषदों में अध्यात्म विद्या ब्रह्म विद्या का उपदेश है। वेदान्त दर्शन तो है ही **'ब्रह्म जिज्ञासा'**। यदि सुविधा सहूलियत बने तो अच्छे विद्वानों से इनका अध्ययन करना उत्तम है। कम से कम अच्छे स्वाध्यायशील विद्वानों से इनकी कथा करानी चाहिये जिससे अनेकानेक लोगों को लाभ मिल सके। ऋषियों का आदेश है **'वेदों नित्य मधीयताम्, सर्वज्ञान मयो हि सः'** वेद सकल ज्ञान से परिपूर्ण हैं अतः उनका नित्य अध्ययन करना चाहिये। ऋषि तर्पण का यह प्रमुख संदेश है।

ईशावास्यम्

फोन (०३३) २५२२२६३६ — पी-३०, कालिन्दी

चलभाष : ०९४३२३०१६०२ — कोलकाता-७०००८९

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

(यू० जी० सी०/ भारत सरकार द्वारा शत–प्रतिशत अनुदानित डीम्ड विश्वविद्यालय

अलंकार (समकक्ष बी.ए.) बी. ए./ एम. ए. पाठ्यक्रमों हेतु

प्रवेश सूचना २०१३–२०१४

निम्नलिखित पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं :—

(क) मुख्य परिसर (केवल पुरुष अभ्यर्थियों के लिए)

(१) वेदालंकार (समकक्ष बी. ए.) (२) विद्यालंकार (समकक्ष बी.ए.) (३) बी. ए.

४) एम. ए. : वैदिक साहित्य, संस्कृत, दर्शन, प्रा. भा. इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व, हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, मनोविज्ञान, मानव चेतना एवं योग विज्ञान, धर्मशास्त्र वैदिक कर्मकाण्ड एवं ज्योतिष।

ख) कन्या गुरुकुल परिसर, हरिद्वार (केवल महिला अभ्यर्थियों के लिए)

१) एम.ए. : संस्कृत प्रा. भा. इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व, दर्शन, हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, मनोविज्ञान।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

www.thearyasamaj.org

मेरे लेखन के साठ वर्ष

जीवन चरित लेखन में मेरा योगदान

डॉ० भवानीलाल भारतीय

महापुरुषों का चरित लेखन एक दुरूह कर्म है । उसमें तटस्थता रखना नितान्त आवश्यक होता है । संसार की भाषाओं में महापुरुषों के चरित साहित्य की महत्त्वपूर्ण सम्पदा मानी गई है । रामायण संसार का प्रथम महाकाव्य ही नहीं हैं वह आदर्श मानव राम की विस्तृत जीवन गाथा भी है । श्रीकृष्ण के बारे में अपने प्रशंसापूर्ण उद्गार प्रकट करते हुए ऋषि दयानन्द ने लिखा था कि महाभारत में उनका जीवन सर्वथा निर्दोष एवं धार्मिक बताया हैं जबकि पुराणकारों ने इस महापुरुष के अमल धवल पावन चरित्र पर कलंक लगाए हैं । बंगाल के महान् लेखक बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने उन्नीसवीं शताब्दी में कृष्ण के महाभारत वर्णित चरित अपनी आलोचनात्मक टिप्पणियों सहित बंगला में लिखा था । यह हिन्दी अनुवाद के रूप में उपलब्ध था । मैंने जब सुमेर राजकीय पुस्तकालय जोधपुर से इसे प्राप्त कर पढ़ा तो मेरी लेखनी कृष्ण के जीवन की पावन गाथा को लिपिबद्ध करने के लिए लालायित हुई ।

आर्य समाज में लाला लाजपत राय तथा पंडित चमूपति ने कृष्ण चरित पर कलम चलाई थी। आश्चर्य होता है कि संस्कृत भाषा और पुरातन शास्त्रों में अधिक गति न रखने वाले उर्दू में लिखने वाले लाला जी ने किस प्रकार कृष्ण के लोक पावन चरित्र का अध्ययन कर उस पर कलम चलाई होगी । पंडित चमूपति का योगेश्वर कृष्ण महाभारत को आधार लेकर लिखी एक संतुलित साहित्यिक कृति ही है । उस समय तक मैंने महाभारत का एक हिन्दी अनुवाद आद्योपान्त पढ़ लिया था । बंकिम की कृति का आधार और उनकी युक्तियों के प्रमाण लेकर जब मैंने १९५६—५७ में कृष्ण चरित लिखा तो स्वामी ध्रुवानन्द जी (राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री) की प्रेरणा से आर्य साहित्य मण्डल अजमेर ने उसे १९५८ में प्रकाशित कर दिया ।

कृष्ण चरित पर लांछन लगने के तीन कारण हैं—प्रथम उन्होंने यद्यपि कोई लोकोत्तर कर्म नहीं किया किन्तु पुराणकारों ने उन्हें ईश्वरावतार घोषित कर मनुष्य की पहुंच से परे कर दिया । द्वितीय-राधा तथा गोपियों के साथ यौनाचरण का दोषी बना कर उन्हें चौर जार शिखा मणि की संज्ञा दी । तृतीय-महाभारत युद्ध तथा भाईयों के पारस्परिक विग्रह के लिए उन्हें उत्तरदायी ठहराया तथा भीष्म, द्रोण, कर्ण आदि कुरु नायकों को छल छिद्र तथा धोखे से मरवाने का दायी बताया । मैंने अपने लिखे जीवन चरित में उन्हें उपर्युक्त तीनों दोषों से मुक्त सिद्ध किया । बंकिम की युक्तियों की सहायता लेने पर भी मैंने उनसे वहां वैमत्य प्रकट किया जब वे पुराण वर्णित प्रसंगों को मिथ्या बताकर भी मात्र अवतारवाद को मान्य करने के कारण इन पौराणिक गप्पों को यथा तथा उचित मान लेते हैं । १९८२ में कृष्णचरित

www.thearyasamaj.org

का संशोधित परिवर्द्धित संस्करण गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली ने नई सजधज से प्रकाशित किया । उसी वर्ष इसे पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार नवाजी गया । अब तक इसके चार-पांच संस्करण छप चुके हैं । प्रथम संस्करण में जहां महाभारत का हिन्दी अनुवाद ही उद्धृत किया गया था वहां दूसरे संस्करण के मूल ग्रन्थ के प्रासंगिक श्लोकों को यथाप्रसंग टिप्पणियों में दिया गया था ।

आगे के वर्षों में मैंने आर्य समाज के कुछ मनीषी विद्वानो तथा नेताओं के संक्षिप्त चरित लिखे। इनका विवरण इस प्रकार है —

१. पंडित गणपति शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व—चुरु (राजस्थान) के मूल निवासी पंडित गणपति शर्मा पुरानी पीढ़ी के प्रख्यात आर्य विद्वान् थे । नई पीढ़ी उनके नाम व काम से प्रायः अपरिचित है । वे दीर्घ जीवी नहीं हुए तथापि उनके शास्त्रीय वैदुष्य की गाथा उस काल में सर्वत्र प्रचलित थी । उनके बारे में पंडित नरदेव शास्त्री, पंडित पद्म सिंह शर्मा आदि ने पर्याप्त लिखा है । इस सामग्री का सम्पादन कर पंडित गणपति शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व नाम से आर्य मार्तण्ड का विशेषांक तथा पृथक ग्रन्थ १९७२ में प्रकाशित किया । इसका पुनः प्रकाशन होना चाहिए ।

२. स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती–प्रख्यात शास्त्रार्थ महारथी, गुरुकुलों के संस्थापक तथा दार्शनिक विद्वान् स्वामी दर्शनानन्द के कई छोटे-बड़े जीवन चरित छपे हैं । आगरा के एक पुराने विद्वान् पंडित श्रीराम शर्मा ने उनका प्रमाणिक जीवनचरित वर्षों पूर्व लिखा था । मधुर प्रकाशन दिल्ली के आग्रह पर मैंने उनकी संक्षिप्त जीवनी लिखी । यह दो बार (१९७२—१९८७) में छपी ।

३. पंडित कालूराम (महात्मा योगीराज)—रामगढ़ (सीकर) निवासी पंडित कालूराम स्वामी दयानन्द के समकालीन, उनके भक्त तथा राजस्थान के मरु प्रदेश में वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले विरक्त महात्मा थे । उन्होंने इस प्रान्त के चुरू, सुजानगढ़ आदि नगरों तथा शेखावाटी क्षेत्र में सर्वत्र वैदिक मत का प्रचार किया था । वर्षों पूर्व उनके एक भक्त कलकत्ता निवासी सेठ जय नारायण पोद्दार ने उनकी संक्षिप्त जीवनी लिखी थी । आर्य समाज टमकोर (जिला झुंझनू) के आर्थिक सहयोग से मैंने उक्त महात्मा जी का संक्षिप्त चरित लिखा जो १९७४ में प्रकाशित हुआ । कालान्तर में कलकत्ता में मेरी मुलाकात पोद्दार परिवार के श्री विश्वनाथ पोद्दार से हुई तो निश्चय हुआ कि महात्मा जी का एक बड़ा जीवन चरित प्रकाशित किया जाय । इस निश्चय के अनुसार १९९८ में मैंने महात्मा कालूराम का जीवनचरित लिखा । उसमें पूर्वोक्त सेठ जय नारायण पोद्दार लिखित जीवनी भी सम्मिलित थी । प्रकाशन व्यय कोलकाता के सेठ बद्री प्रसाद पोद्दार ट्रस्ट ने वहन किया था ।

४. देशभक्त कुअर चांदकरण शारदा--अजमेर का शारदा परिवार वैदिक धर्म और आर्य समाज की सेवा में अग्रगण्य रहा है । इसी परिवार के तेजस्वी नक्षत्र कुअर चांदकरण शारदा की देश, समाज और धर्म के प्रति सेवाओं का विस्तृत उल्लेख कर मैंने जो जीवन चरित लिखा उसे परोप-कारिणी सभा ने १९८१ में प्रकाशित किया ।

५ भारत में क्रान्तिकारी चेष्टा के आद्य प्रवर्त्तक : पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा–ऋषि दयानन्द के

www.thearyasamaj.org

संस्कृतज्ञ शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा आगे चलकर क्रान्तिकारियों के मार्गदर्शक तथा नेता बने थे। अंग्रेजी में उनकी प्रमाणिक जीवनी गुजराती लेखक इन्दुलाल याज्ञिक ने लिखी थी। इसकी एक दुर्लभ प्रति मुझे अहमदाबाद के स्व. नरेन्द्र देव ने दी थी। इस ग्रन्थ का आधार लेकर मैंने वर्मा जी की हिन्दी में जीवनी लिखी। इसे १९८४ में गोविन्द राम हासानन्द ने प्रकाशित किया। वर्षों से यह ग्रन्थ अनुपलब्ध था। इसे अब आर्य प्रकाशन दिल्ली प्रकाशित कर रहे हैं।

६. श्रद्धानन्द जीवन कथा–जब श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का सम्पादन कार्य मुझे दिया गया तो मैंने इसके अन्तिम ग्यारवें खण्ड में स्वामी श्रद्धानन्द की विस्तृत जीवनी लिखी। इसके लिए पंडित सत्यदेव विद्यालंकार लिखित स्वामी जी की प्रमाणिक वृहत्-जीवनी की सहायता ली गई थी। आर्य समाज के बीस बलिदानी तथा कृष्ण कथा सामान्य पाठक के लिए उपयोगी ग्रन्थ हैं।

३१४, शंकर कालोनी, श्री गंगानगर

डॉ० कैलाश 'कर्मठ' को संगीत शिरोमणि सम्मान

दिल्ली योग निकेतन १२ मई को स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह में अग्निहोत्री ट्रस्ट द्वारा तीन विद्वानों को सम्मान व अभिनन्दन हुआ जिसमें वैदिक भजनोपदेशक डॉ० कैलाश 'कर्मठ' कोलकाता को, ११०००/- रुपये, शाल, श्रीफल व मोतीमाला से सम्मानित किया गया। संगीत शिरोमणि सम्मान पर उपस्थित हीरो मोटर के मालिक सत्यानन्द मुंजाल व ट्रस्ट के अध्यक्ष दर्शन अग्निहोत्री, स्वामी प्रणवान उद्योग निकेतन व २००० हजार लोगों के बीच भव्य सम्मान हुआ।

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय की नवीनकृति प्रकाशित

'मातृभूमि वैभवम् पृथिवी सूक्त विमर्श'

मूल्य : १२५) रुपये मात्र

प्रकाशक : आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-६

www.thearyasamaj.org

संदर्भ–'महाभारत' का प्रसंग

बड़ों का अपमान और आत्म प्रशंसा दोनों निंदनीय हैं

प्रो० ओमकुमार आर्य

'रामायण' और 'महाभारत' ये दोनों हमारे इतिहास ग्रंथ ही नहीं 'गौरव ग्रन्थ' हैं । पाश्चात्य विद्वानों ने षडयंत्र के तहत इन दोनों ग्रन्थों की ऐतिहासिकता पर प्रश्न चिह्न लगाकर हमारे भव्य अतीत को और अतीत कालीन परंपराओं को ध्वस्त करने का ही कुप्रयास किया था जो किसी हद तक तो अपना कुप्रभाव दिखा सका, उसके कुछ कुपरिणाम भी सामने आये, किंतु चूंकि हमारी जड़ें बहुत गहरी थीं, हमारा इतिहास बहुत ही सबल आधार पर स्थित था अतः थोड़ी बहुत क्षति तो हमें अवश्य झेलनी पड़ीं किंतु पाश्चात्यों के दुर्भावनापूर्ण कुप्रयास एवं षडॉयंत्र न तो हमें और न हमारे इतिहास को समूलतया नष्ट कर सके । शायद इसी को ध्यान में रखते हुये उर्दू के प्रसिद्ध कवि अल्लामा इकबाल ने कभी कहा था–

'यूनान, मिश्र, रोमाँ, सब मिट गये जहाँ से, कोई बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी' लेकिन अब ऐसा लगता है कि हमारे आलस्य एवं उपेक्षा के कारण एवं देश के नीति-नियंताओं की अंग्रेजियत-परस्त दास-मानसिकता के कारण 'हस्ती मिटने/मिटाने' का जो कार्य पराधीनता के काल में नहीं हो सका अब इस आधी-अधूरी स्वाधीनता के काल में हो जायेगा,ऐसी आशंका है ।

अपने अतीत और अतीत कालीन इतिहास के विषय में उक्त टिप्पणी आवश्यक थी ताकि हमारी युवा पीढ़ी अपने ऐतिहासिक विरासत की सुरक्षा के प्रति सजग एवं सावधान रहे । इस लेख का विषय इससे अलग है । इसके शीर्षक में मैंने ये दो शब्द–बड़ों का 'अपमान' एवं 'आत्म प्रशंसा' 'महाभास्त' के एक प्रसिद्ध प्रसंग में से लिये हैं, जिनको (बड़ों का अपमान, और आत्म प्रशंसा को) महाभारतकार ने निंदनीय ही नहीं अपितु 'मृत्यु' के समान कहा है । आज जिस काल में हम रह रहे हैं, उसमें इन दोनों का ही बोलबाला है, राजनीति तो पूर्णतया इनका एक घिनौना खेल और निकृष्ट अखाड़ा बन चुकी है, शायद इसी का भयावह कुपरिणाम है जो हमारे चारों ओर मृत्यु का नंगा नाच हो रहा है, 'महाभारत' का यह विवेच्य प्रसंग इस ओर ही तो इंगित कर रहा है । आइये देखें कैसे ?

एक बार युधुष्ठिर को भ्रम हो गया कि गाण्डीवधारी अर्जुन के हाथों महाबली कर्ण मार दिया गया है । किंतु वास्तविकता यह नहीं थी । जब युधिष्ठिर को वास्तविकता का पता चला (कि कर्ण तो जीवित है) तो उन्हें बहुत दुःख हुआ । वे अर्जुन से कहने लगे कि हम तो तुम्हारे ही भरोसे युद्ध में विजय प्राप्त करने की आस लगाये बैठे थे, तुम्हारा शौर्य ही हमारा सम्बल था । विजय के मार्ग में कर्ण ही तो सबसे बड़ी बाधा है और उस बाधा को तुम अब तक दूर नहीं कर पाये हो, हम जीतेंगे कैसे ? और भी बहुत कुछ कहा और आवेश तथा क्रोध के वशीभूत अर्जुन के शौर्य एवं गाण्डीव को ही युधिष्ठिर धिक्कारने

www.thearyasamaj.org
लगे, उन्होंने कहा —

धिग्गाण्डीवंधि क् ते बाहुवीर्यमसंख्येयान् वाणगणाश्च धिक् ते ।

धिक्, ते कितुं केसरिणः सुतस्य कृशानुदत्तं च रथं च धिक् ते ।।

अर्थात् धिक्कार है तुम्हारे गाण्डीव धनुष को, धिक्कार है तुम्हारी भुजाओं के पराक्रम को, धिक्कार है तुम्हारे इन असंख्य वाणों को, धिक्कार है तुम्हारी इस पवनसुत चित्रांकित ध्वजा को और धिक्कार है अग्निदेव प्रदत्त तुम्हारे इस रथ को । इस प्रकार युधिष्ठिर ने क्या गाण्डीव, क्या अर्जुन का बाहुबल, क्या अर्जुन के बाण, क्या ध्वजा, क्या रथ, सभी को धिक्कार दिया । और इसके कारण एक विकट समस्या उपस्थित हो गई । समस्या यह थी कि अर्जुन ने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि यदि कभी युद्ध के प्रसंग में कोई मेरे गाण्डीव धनुष की, मेरे पराक्रम की, बाणों की, ध्वजा रथादि की निंदा करेगा, इन्हें धिक्कारेगा तो मैं (अर्जुन) उस ऐसा करने वाले को जीवित नहीं छोडूँगा, और यदि किसी कारण से वह वह जीवित रह गया (मैं मार नहीं सका) तो मैं (अर्जुन) जीवित नहीं रहूँगा । अब इधर कुआँ और उधर खाई वाली स्थिति पैदा हो गई । या तो युधिष्ठिर मरे या अर्जुन, दोनों ही स्थितियाँ घातक होंगी । और देखते ही देखते अर्जुन ने युधिष्ठिर का वध करने हेतु तलवार उठा ली, प्रहार करने का तैयार हो गया । 'महाभारत' के शब्दों में—

................कौन्तेयः श्वेतवाहनः ।

असिं जग्राह संक्रुद्धो जिघांसुर्भरतर्षभम् ।।

स्थिति को तुरन्त सम्हालते हुये योगेश्वर श्रीकृष्ण ने हस्तक्षेप किया और अर्जुन को रोकते हुये पूछा कि अर्जुन तुम्हारे समक्ष इस समय कोई शत्रु उपस्थित नहीं हैं, फिर तुमने तलवार क्यों उठाई हुई है—

न तं पश्यामि कौन्तेय यस्ते वध्यो भविष्यति ।

प्रहर्तुमिच्छसे कस्मात् किं वा ते चित्त विभ्रमः ।।

और भी

कस्माद् भवान् महाखङ्ग परिगृह्णाति सत्वरः ।

तत् त्वां पृच्छामि कौन्तेय किमिदं ते चिकीर्षितम् ।।

आदि-आदि । अर्थात् मैं पूछता हूँ अर्जुन, तुम किस पर प्रहार करने को उद्यत हुये हो । तब अर्जुन उत्तर देता है जिसका संक्षेपण, सारांश यह है—

अन्यस्मैदेहि गाण्डीवमिति.......................................।

भिन्द्यामहं तस्य शिर इत्युपांशुव्रतं मम ।।

अर्थात् जो कोई भी यह कहेगा कि तुम गाण्डीव के योग्य नहीं हो, इसे किसी और को दे दो (अर्थात मेरे पराक्रम की और गाण्डीव धनुष की निंदा करेगा) तो यह वचन मैं सहन नहीं करुँगा, ऐसा कहने वाले का सर काट दूंगा । तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कई बातें समझाई और बताया कि युधिष्ठिर किसी भी अवस्था में तुम्हारे द्वारा (अर्जुन के द्वारा) वध योग्य नहीं हैं । हाँ, एक उपाय है, वे जीवित

www.thearyasamaj.org

भी रह जायेंगे और एक प्रकार से उनका वध भी हो जायेगा, तुम उनका वाणी से अपमान कर दो, 'आप' की जगह 'तूकार' से उन्हें संबोधित कर दो ? क्योंकि जो बड़े है, पूज्य हैं, वृद्ध जन है, गुरुजन है उनका तो अपमान ही उनकी मृत्यु है—

सम्मानितः पार्थिवोऽयं सदैव त्वया च भीमेन तथा युभाभ्याम् ।।

अर्थात् युधिष्ठिर का तुम चारों भाइयों ने सदा सम्मान किया है । अब 'आप' के स्थान पर 'तू' कह दो, समझो कि युधिष्ठिर मर गया—

त्वमित्यत्र भवन्तं हि ब्रूहि पार्थ युधिष्ठिरम् ।
त्वमित्युक्तो हि निहतो गुरुर्भवति भारत ।।

हे अर्जुन, युधिष्ठिर को 'आप' ने कहकर 'तू' कह दो । बस 'तूकार' से गुरुजनों/पूज्यजनों (यहाँ युधिष्ठिर) को 'मर गये' ऐसा समझो । उनका अपमान, उनकी मृत्यु ही है ?

समझाने पर अर्जुन मान गये और युधिष्ठिर को 'तू' कहकर संबोधित कर दिया । किंतु इस बात पर अड़ गये कि चूँकि मैंने प्रतिज्ञा का सही पालन नहीं किया, अब मैं (अर्जुन) आत्महत्या करूँगा । तभी श्रीकृष्ण ने फिर उपदेश दिया कि अपने गुणों की आप प्रशंसा करना, अपने गुणों का स्वयं बखान करना, व्यक्ति के लिये मृत्यु ही है, अतः हे अर्जुन तुम अपनी प्रशंसा कर लो, तुम्हारी प्रतिज्ञा का पालन हो जायेगा, अर्थात् तुम मृत के समान ही हो जाओगे—

ब्रवीहि वाचाद्य गुणा निहात्मनस्तथा हतात्मा भवितासि पार्थ ।।

हे अर्जुन तुम अपनी ही वाणी द्वारा अपने गुणों का वर्णन करो (आत्म प्रशंसा करो) मान लिया जायेगा कि तुमने अपने ही हाथों अपना वध कर लिया है । अर्जुन ने 'तथास्तु' कहकर अपने गुणों का स्वयं ही वर्णन प्रारम्भ कर दिया । इस प्रकार श्रीकृष्ण ने बहुत ही बुद्धिमत्ता पूर्वक दोनों भाइयों को मरने/मारने से बचा लिया ।

उक्त प्रसंग कोई साधारण प्रसंग नहीं है । मैंने तो बड़ों के अपमान और आत्म प्रशंसा को महज निंदनीय कहा है, 'महाभारत' तो इनको 'मृत्यु' की संज्ञा देता हैं । पूज्यजनों का यदि अपमान हो गया तो उनके पास रहा ही क्या ? वे तो मर गये, क्योंकि नीतिकार भी यही कहता है—मानो ही महतां धनम्— एक मान ही तो बड़ों के जीवन की जमापूँजीं है, वह चली गई तो जीवन का आधार ही नष्ट हो गया समझो । अतः हमें अपने बड़ों का अपमान कभी भूलकर भी नहीं करना चाहिये । आजकल सभी प्रकार के शिष्टाचार की सर्वत्र धज्जियाँ उड़ाई जा रही है, वृद्धों को कहीं भी यथेष्ठ आदर, मान सम्मान नहीं दिया जा रहा, वे बेचारे जीवित होकर भी 'मृत' समान हैं । और उधर चारों ओर आत्म प्रशंसा, अपने गुणों का स्वयं द्वारा ही जोर शोर से बखान, आत्म विज्ञप्ति की मानों बाढ़ ही आई हुई है । नेता, अभिनेता, छुटभैये सब अपने गुणगान में स्वयं ही पूरी शक्ति से लगे हुये हैं । अंग्रेजी की कहावत तो यह कहकर ही —Self praise is no recommendation संतोष कर लेती है किन्तु 'महाभारत तो Self praise को भी मृत्यु की कोटि में रखता है । आशय स्पष्ट है कि आत्म प्रशंसा शिष्टाचार के सर्वथा

www.thearyasamaj.org
विरुद्ध है, इससे सामाजिक मर्यादायें टूटती हैं, व्यक्ति की गरिमा, विश्वसनीयता, प्रामाणिकता को गंभीर क्षति पहुंचती है । आज इसके दुष्परिणाम सबके सामने हैं । किन्तु अनुशासनहीनता, स्वेच्छारिता, उदण्डता के इस दौर में किसे चिन्ता है समाज की नैतिकता की, मर्यादाओं की और रही सही कसर पूरी कर दी हुई है लचर कानून व्यवस्था ने, और कानून को लागू करने के लिये जो दृढ़ इच्छा शक्ति चाहिये उसके घोर अभाव ने । अब स्वार्थी, सत्तालोलुप वोटबैंक की घटिया राजनीति करने वाले गिरगिटिया नेताओं का मुँह न ताक कर हमें स्वयं कटिबद्ध होकर अपने नैतिक मूल्यों , सामाजिक शिष्टाचार और जो राष्ट्र के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं उन नियमों तथा अपनी भव्य परंपराओं की रक्षा करनी होगी । इसके लिये जरूरी है कि हम अपनी युवापीढ़ी को अपनी धार्मिक, सांस्कृतिक मान्यताओं का सम्मान करना सिखायें, अपने इतिहास का सही स्वरूप उनको समझायें, उनमें 'स्व' के प्रति रुचि, प्यार, श्रद्धा उत्पन्न करें, ऐसा करेंगे तभी हम और हमारा अस्तित्व बचे रहेगें, अन्यथा अपनी पहचान भुलाकर, अपनी संस्कृति का दुःखद लोप अपनी आंखों से देखते हुये, पशुओं जैसा अपमानपूर्ण जीवन जीना हमारी नियति होगी उस दुरवस्था से हमें कोई नहीं बचा सकेगा । पूज्यों का अपमान, आत्मप्रशंसा जैसे दुर्गुण तो दुर्गुणों के महागोदाम में से निकाली हुई एक तुच्छ सी बानगी है, बाकी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक मृत्यु का भयानक सामान तो अन्दर छुपा पड़ा है, हम सचेत रहें तो बचेंगे अन्यथा बचना मुश्किल है—

इतिहास, धर्म, संस्कृति सब दांव पर लगे हुये हैं, आदर्श, परम्परा, नैतिक मूल्य भी कीचड़ में धंसे हुये हैं । महर्षि की भांति संघर्ष का बिगुल बजाना होगा चाहे कुछ भी पड़े झेलना इनको तो बचाना होगा ।

संपर्क सूत्र–१६०७/७ जवाहर नगर, पटियाला चौक,जींद, (हरियाणा-१२६४२)

दूरभाष ०१६८१-२२६१४७ ०९४१६२९४३४७

Understanding Satyartha Prakash
(The Light of Truth)

आचार्य उमाकान्त उपाध्याय द्वारा रचित यह ग्रन्थ अंग्रेजी भाषा के पाठकों के लिए सत्यार्थ प्रकाश को अच्छी तरह समझने के लिए अत्यन्त उपयोगी सहायक ग्रन्थ है । यह ग्रन्थ **गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार** से सम्मानित है । पुस्तक का मूल्य १००) रु० है (डाक खर्च अतिरिक्त)

पुस्तक प्राप्ति स्थान :–

आर्य समाज कलकत्ता

१९ विधान सरणी कोलकाता-६

www.thearyasamaj.org

''खुल गई गाँठ जुड़ गया प्रेम का धागा''

– श्री देवनारायण भारद्वाज

एक शिष्य ने अपने गुरूजी से प्रश्न किया—महाराज! आपके गुरु कौन हैं ? उन्होंने सहजभाव से उत्तर दिया—मेरे गुरु हैं—मूर्ख । शिष्य ने फिर प्रति प्रश्न किया—आपके गुरु मूर्ख हों, आप इतने बड़े, विद्वान् ! यह कैसे संभव है । गुरूजी ने अपने कथन को स्वच्छ करते हुए कहा— मेरे गुरु मूर्ख नहीं हैं, अर्थात् जो भी मूर्ख हैं—वे ही मेरे गुरू हैं । वे जो भी अवांछित मूर्खतायें करते हैं, उनको देखकर मैं स्वयं को सतर्क—सावधान कर लेता हूँ और समझदारी की राह पर चलता रहता हूँ । किसी दार्शनिक ने ठीक ही कहा है—''सबसे भले हैं मूढ़ जिन्हें न व्यापे जगत गति'' । जगत के प्रवाह को जांच कर व्यवहार करने से ही मूढ़ता मिटती और शूरता आती है—'जैसी बहे बयार—पीठ तहँ तैसी दीजै' यह कहावत हमारा आज भी मार्गदर्शन करती है ।

ऐसा कौन है ? जो परिस्थिति जन्य मूर्खताओं की चपेट में न आ जाता हो ! प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने दो बिल्लियाँ पालीं एक बड़ी दूसरी छोटी । उन्होंने उनके रहने के लिए एक कोष्ठ निर्माण कराते समय कारीगर को निर्देश दिया कोष्ठ में बिल्लियों के आवागमन हेतु दो छिद्र बनाएँ—बड़ी बिल्ली के लिए बड़ा, छोटी बिल्ली के लिए छोटा, जबकि एक ही बड़े छिद्र से दोनों बिल्लियों का आवागमन हो सकता था । एक दूसरे बड़े वैज्ञानिक मित्र के आमन्त्रण पर रात्रि भोजन के लिए उनके घर गये । भोजन के बाद विशद रूप से वार्तालाप होता रहा । आधी रात होने लगी तो आतिथेय मित्र ने अतिथि मित्र से कहा आपको जाना भी है, तो उन्होंने उत्तर दिया—मैं समझता था कि जाना आपको है ।

दार्शनिक जी ग्राम से निकल रहे थे । एक दीवार पर गोबर के उपले पथे देखकर चौंक पड़े और किसान से कह बैठे, आपकी भैंस अजीब है । कैसे गोबर करती है जो दीवार पर इतनी अच्छी सुगढ़ दृश्यावली बन जाती है । श्याम सलोनी स्थूल वदन पत्नी बसन्त पंचमी पर पीली साड़ी में सज-धज कर अपने साहित्यकार पति के समक्ष आई और पूछ बैठी मैं कैसी लग रही हूँ ? पति ने तपाक से उत्तर दिया—पीले पीले सरसों के खेत में जैसे भैंस खड़ी पगुराय । उस दिन माननीय मन्त्री महोदय ने तो सीमा ही पार दी । राष्ट्र नायक रफी अहमद किदवई के स्मृति समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर सम्पूर्ण समय प्रतिष्ठित फिल्म गायक मोहम्मद रफी का गुणगान कर गये ।

ऐसा कौन है ? जिसके जीवन में मूर्खतायें न उपस्थित होती हों । दूसरों की मूर्खताओं पर आप हँस सकते हैं, किन्तु उनसे शिक्षा भी ले सकते हैं । अपनी मूर्खताओं पर भले ही हँस न सकते हों, किन्तु ग्लानि अनुभव करते हुए शिक्षा तो ले ही सकते हैं ।

ऐसी दशा में आप ही गुरु और आप ही शिष्य बन जाते हैं । लेखक के लोक व्यवहार में स्वयं

www.thearyasamaj.org

उसके द्वारा ऐसे अनेक अवसर उपस्थित हुए जिनके कारण वह लज्जा से सराबोर हो गया । कई दिन तक आत्मग्लानि से पीड़ित रहा । पश्चाताप और प्रायश्चित के बाद ही इस अनहोनी से मुक्ति संभव हुई । एक बार तो मेरे द्वारा असावधानी पूर्वक एक शब्द के उच्चारण मात्र से बना बनाया कीर्ति स्तम्भ ढहने की स्थिति में आ गया । भगवान कृष्ण की भाँति अतिशय लोकप्रिय सखा से विगलता होते होते बची । उनका नाम श्रीकृष्ण का पर्यायवाची माना जाता है—डा० गोपीनाथ मिश्र । युवावस्था में कानपुर से शिक्षा करके श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ में नियुक्त हुए थे । उन्होंने प्रभूत अध्ययन किया था, और प्रचुर मात्रा में उपाधियाँ अर्जित की थी । कई विषयों में स्नातकोत्तर, शिक्षाशास्त्री, अनेक भाषाओं के ज्ञाता, पत्रकारिता, आयुर्वेद आदि के प्रमाण-पत्र धारी.,भूगोल विभाग के अध्यक्ष पद से सेवा निवृत्ति के बाद भी उनका अध्ययन अनवरत चलता रहा । अपने जीवन की हीरक अमृतययी आयु में उन्होंने वामन पुराण में भूगोल विषय पर डी. लिट की उपाधि प्राप्त की थी । विश्वविद्यालय में शोध विषयक साक्षात्कार हेतु बुलाये जाने पर सभी परीक्षक प्राध्यापक इनसे आयु में छोटे थे, साक्षात्कार के स्थान पर इससे शोध विषयक व्याख्यान सुनकर ज्ञान वर्द्धन कर धन्य हुए थे ।

इन्होंने अपना निवास तो गाजियाबाद में बनाया था, जहाँ इनके पुत्र का परिवार निवास करता था, किन्तु अलीगढ़ को अपने जीवन की अन्तिम श्वांस तक नहीं छोड़ा । जिस भवन में भी यह रहते थे, उसमें इनसे अधिक इनकी पुस्तकें रहती थीं । जिस तख्त पर यह बैठकर पढ़ते-लिखते थे एवं शोध करते थे, उसी पर पुस्तकें एक ओर हटाकर सो जाते थे, जब जगते तो उन्हीं में फिर से रम जाते थे । अलीगढ़ में शैक्षिक, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक, आयुर्वेदिक आदि कोई संस्था न थी, जिसमें इनका हस्तक्षेप न हो । कानपुर से आते समय जो साम्यवादी मानसिकता लेकर चले थे। वह यहाँ आकर और बलवती हो गयी थी । किन्तु वेदमनीषा न्यास के संचालक के रूप में इन्हें वेदों के प्रति लगाव हुआ, और अन्यान्य मतमतान्तर के लोगों के मध्य वेद के सन्देश को प्रचारित करने में सफल हो गये । अपने पौत्र का जन्मदिन स्वयं यज्ञ करके मनाने लगे । पन्द्रह फरवरी २००८ को अलीगढ़ की प्रख्यात प्रदर्शनी में आयोजित समारोह के मध्य आयोजकों ने माल्यार्पण करके इनका सम्मान किया । उसी समय भरी सभा में इनका हृदयाघात से निधन हो गया था, और सम्पूर्ण महानगर इनके दिवंगत होने पर दुःखी हो उठा था ।

अब ऐसी महान् विभूति की मेरे प्रति अन्यमनस्कता का कारण जान लीजिये । एक विशाल समारोह का संचालन करते हुए सबसे अन्त में मैंने जब गोपीनाथ मिश्र को सम्बोधन के लिए आमंत्रित करते समय इनकी गरिमा के अनुसार उपमा देवर्षि नारद से दे दी । इन्होंने इस उपमा के प्रति अपनी अस्वीकृति तो अपने व्याख्यान में ही कर दी थी, किन्तु इनके कई पुराने साम्यवादियों को इन्हें व्यग्र बनाने का अवसर मिल गया था । वे ताना देने लगे । देखा ! आप इन वेदवादियों के चंगुल में फंस गये, वे आपको समझते हैं—घर का नां घाट का—नारद के अभिशाप का—'लो जरा सी बात पर बरसो के याराने

www.thearyasamaj.org

गये । चलो अच्छा हुआ कुछ लोग पहचाने गये ।' जहाँ सप्ताह में दो बार उनसे अपने घर पर भेंट होती थी, अब दो सप्ताह के बाद पधारने पर मैंने इनके समक्ष श्रीमद् भगवद्गीता के १० वें अध्याय का छब्बीसवां श्लोक रख दिया—जिसमें योगीराज कृष्ण ने कहा है—'देवर्षीणां च नारदः' । इसके समर्थन में श्रीमद् भागवतान्तर्गत एकादश स्कन्ध उद्धवगीता का एक श्लोक सुना दिया, यहां भी श्रीकृष्ण ने अपनी विभूतियों की गणना की है ।

ब्रह्मर्षीणां भृगुरहं राजर्षीणां मनुः । देवर्षीणाँ नारदोऽहं हविर्धान्यस्मिधेनुषः ।।

अध्याय १६ श्लोक संख्या १४

मैं ब्रह्मर्षियों में भृगु, राजर्षियों में मनु, देवर्षियों में नारद और गौवो में कामधेनु हूँ । इस संदर्भ को पढ़कर डा० मिश्र के मन की ग्रन्थि खुल गयी, और प्रेम की रज्जु उसके साथ बँध गयी ।

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय ।
टूटे से फिर न जुड़े, जुड़े गांठ पड़ जाय ।।

ऐसा न होकर 'खुल गयी गांठ जुड़ गया प्रेम का धागा—पाकर श्रुति सन्देश जगत् अनुरागा ।' डा० गोपीनाथ मिश्र के सतत् सक्रिय सहयोग व मार्ग दर्शन में वेद मनीषा न्यास के माध्यम से पौराणिक, जैन-बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम और वैदिक अन्यान्य क्षेत्रों में पूर्ववत् प्रवाहित होने लगी थी मनोरम मन्त्र धारा—'मनुर्भव जनया दैव्यंजनम्' अर्थात् स्वयं मनुष्य बनो तथा श्रेष्ठ मनुष्यों के निर्माण में सहायता हो। फिर से बढ़ गया था भगवान् कृष्ण की विभूति के रूप में देवर्षि नारद का मान और मेरी मधुर मैत्री का सम्मान । इस गीता व्याख्यान ने भारतीय संस्कृति के अभियान को फिर से गतिमान बना दिया ।

'वरेण्यम् अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़-२०२००१ (उ० प्र०)'

आर्य दैनन्दिनी–२०१४ (डायरी)

आप सबको पता है कि आर्य प्रकाशन हर वर्ष आर्य दैनन्दिनी का प्रकाशन करता है तथा उसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम के साथ दूरभाष नम्बर प्रकाशित करता है । अतः आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ दूरभाष व अपना पता भेजें जिससे कि सही नम्बर प्रकाशित हो सके ।

आप सभी से निवेदन है कि अपने नाम-पते ०१/९/२०१३ तक भेजने की कृपा करें । ताकि उसे भली प्रकार आर्य दैनन्दिनी में प्रकाशित किया जा सके । निम्न पते पर भेजें ।

संजीव आर्य (प्रबन्धक)
आर्य प्रकाशन, ८१४, कुण्डेवालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली-६, मो० ०९८६८२४४९५८

www.thearyasamaj.org

छत्रपति शिवाजी का राज्याभिषेक और व्यक्तित्व दर्शन

– प्रा० डॉ० चन्द्रशेखर लोखण्डे

छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा सन् १६५९ में अफजल खाँ का वध और १६६३ ई० के शाईस्ता खाँ की फजीहत किये जाने के पश्चात् मुगल बादशाह औरंगजेब बहुत ही क्रोधित हुआ और उसने मिर्जा राजा जयसिंह को शिवाजी को पराजित करने के लए दक्षिण भेजा । राजा जयसिंह ने कूटनीति और धूर्तता से शिवाजी महाराज को मुगल बादशाह औरंगजेब को मिलने के लिए आगरा भेज दिया । औरंगजेब ने छल कपट कर शिवाजी को कैद कर लिया । ६ मास के उपरान्त छ० शिवाजी बड़ी चालाकी और नाटकीय ढंग से आगरे से पलायन कर अपने स्वराज्य में लौट आये । इसके पश्चात् दो वर्षो तक स्वराज्य में शान्ति रही । औरंगजेब छ० शिवाजी से संघर्ष करता हुआ थक चुका था । और इसी कारण निरुपाय होकर उसने शिवाजी को राजा की उपाधि प्रदान कर दी । औरंगजेब ने कहा था— 'मेरे विरुद्ध जितने व्यक्तियों ने स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने का प्रयास किया, उनमें से किसी को सफलता नहीं मिली । एक मात्र शिवाजी ही अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में सफल हो सका ।'

इसके बाद छ० शिवाजी ने दुबारा संघर्ष कर वे किले लौटा लिए जिन्हें राजा जयसिंह ने उनसे अपहृत कर लिए थे । जब मुगल बादशाह की ओर से छ० शिवाजी को राजा का दर्जा दिया गया तो उन्होंने स्वयं को राजा सिद्ध करने के लिए राज्याभिषेक करने का निश्चय किया । उन्होंने काशी के गागाभट्ट को बुलवाया और उनके पौरोहित्य में राज्यसिंहासनारूढ़ होकर विधि पूर्वक राज्याभिषेक करवाया । इस तरह ६ जून १६७४ को छत्रपति शिवाजी महाराज धर्मशास्त्र की आज्ञा और विधिविधान के अनुसार क्षत्रिय कुलावतंस, सिंहासनाधीश इन दो उपाधियों से अलंकृत होकर मराठा साम्राज्य के राजाधिपति बन गये । इस प्रकार छ० शिवाजी चारों ओर से मुगल साम्राज्य बीजापुर के सुल्तान गोआ के पुर्तगालिओं और जंजीरा स्थित अबी सानिया के समुद्री डाकुओं से घिरे होकर और प्रतिरोध के बावजूद उन्होंने दक्षिण पश्चिम महाराष्ट्र में एक स्वतन्त्र हिन्दू राज्य की स्थापना की । ६ वर्ष के पश्चात् जब १६८० ई० में उनकी मृत्यु हुई तब उनका राज्य बेलगाँव से लेकर तुंगभद्रा नदी के तट तक पश्चिमी कर्नाटक में फैला हुआ था ।

तत्कालीन सूरत (गुजरात) का प्रेसिडेन्ट हेन्री ऑक्झेण्डेन ६ जून १९७४ को छ० शिवाजी के राज्याभिषेक समारोह में उपस्थित था, उसने महाराज को नजराना पेश करते हुए नजदीक से देखा था । वह लिखता है— 'शिवाजी ४७ वर्ष की उम्र के हैं और वे **अत्यन्त** सुन्दर और प्रभावशाली है । उनके साथ चर्चा करने से मालूम हुआ कि वे तीव्र बुद्धिमत्तावाले और चतुर वृत्ति के हैं । उनकी दृष्टि तेज, नाक सरल और बांकदार है ।'

कॅरे नामक फ्रेंच यात्री ने शिवाजी को महामानव कहा है ।

पांडीचेरी का गवर्नर मार्दिन ने कहा था— 'छ० शिवाजी जैसा दूसरा उस काल में नहीं हुआ है।'

www.thearyasamaj.org

छ० शिवाजी के बारे में **इतिहासकार यदुनाथ सरकार** लिखते हैं— 'शिवाजी महाराज यथार्थ में व्यवहारिक आदर्शवादी थे, वे शेरशाह सूरी और रणजीत सिंह से भी महान थे तथा ओलिवर क्रामवेल और नेपोलियन से भी उनकी महानता की तुलना नहीं हो सकती, क्योंकि वे दोनों क्षुद्र अहंभाव से प्रेरित थे।'

तत्कालीन मुगल सल्तनत का व्योरा लिखनेवाला खाफी खाँ 'छ० शिवाजी के बारे में लिखता है— 'शिवाजी ने यह निश्चय बना लिया था जब कभी उनके साथी लूट पाट करें, वे मस्जिद या किसी स्त्री को कोई हानि न पहुंचाये................जब इनके सैनिक कुरान, हिन्दू या मुसलमान स्त्रियों को बन्दी बनाते तब वे स्वयं उनकी रखवाली करते थे।'

प्रसिद्ध इतिहासकार श्री० महाजन कहते हैं—'शिवाजी केवल मराठा जाति के ही निर्माणकर्त्ता न थे, अपितु वे मध्यकालीन भारतवर्ष के निर्माणकर्त्ता थे।'

–सीताराम नगर, लातूर-४१३५३१

(शेषांश पृष्ठ ११ का)

नोट : वेदालंकार (समकक्ष बी.ए.) एवं एम. ए. वैदिक साहित्य में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों से कोई शिक्षण शुल्क नहीं लिया जाता है तथा योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

आवेदन प्रक्रिया :— उपरोक्त पाठ्यक्रमों में प्ररेश हेतु विवरण पत्रिका एवं आवेदन पत्र रु० ३००/- के नकद भुगदान पर अथवा डाक से रु० ३५०/- का डिमाण्ड ड्राफ्ट जो कि कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पक्ष में हरिद्वार में देय हो, कुलसचिव कार्यालय को भेजकर प्राप्त किये जा सकते हैं। अभ्यर्थी वेबसाइट से भी आवेदन पत्र डाऊनलोड कर उसके साथ रु० ३००/- का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न कर भेज सकते हैं। शैक्षिक अर्हता, आवेदन प्रक्रिया तथा अन्य जानकारियाँ (विवरण पत्रिका एवं आवेदन पत्र सहित) विश्वविद्यालय वेबसाइट www.gkvac.in पर उपलब्ध हैं।

आवेदन पत्र जमा करने का अन्तिम तिथि :–

* १६ अगस्त, 2013 (31 अगस्त, 2013 विलम्ब शुल्क रु० 50/- सहित)

शीघ्र प्रवेश हेतु सम्पर्क करें

* वेद विभाग (9410192541) * संस्कृत विभाग (9412307123) * दर्शन विभाग (9897273663)
* मानविकी संकाय (9837158021,9412074666)

कन्या गुरुकुल परिसर, हरिद्वार (01334-213522, 9411100359) **कुलसचिव**

www.thearyasamaj.org

नैनीताल हाईकोर्ट के आदेशानुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति का निर्वाचन सम्पन्न

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, शिक्षाविद्, कर्मठ आर्य नेता, राज्यसभा सांसद

– डॉ० रामप्रकाश जी कुलाधिपति निर्वाचित

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा लगभग ११० वर्ष पूर्व स्थापित आर्यसमाज की सर्वोच्च शिक्षण संस्था 'गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय', जिसका संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वाधान में किया जाता हैं, के कुलाधिपति के रूप में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, विचारक, लेखक, राज्य सभा के सांसद डॉ. रामप्रकाश जी को निर्वाचित घोषित किया गया। निर्वाचन नैनीताल हाई कोर्ट के आदेश दिनांक ३१ अक्टूबर, २०१२ के आलोक में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी एवं भारतीय निर्वाचन आयोग के पूर्व सचिव श्री हरबंस सिंह जी की अध्यक्षता एवं देख-रेख में नई दिल्ली स्थित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कार्यालय में दिनांक २० मई, २०१३ को प्रातः ११ बजे सम्पन्न हुआ। दिनांक १४ मई, २०१३ को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने कुलाधिपति हेतु डॉ. रामप्रकाश जी का नाम प्रस्तुत किया था। अन्य कोई नाम न आने के कारण निर्विरोध रूप से आगामी ५ वर्षों के लिए डॉ. रामप्रकाश जी को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति निर्वाचित घोषित किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्वाचन कराए जाने से लम्बे समय से चला आ रहा गतिरोध समाप्त हो गया है।

लम्बे समय से चला आ रहा गतिरोध समाप्त आर्य जगत् एवं गुरुकुल कांगड़ी में उत्साह की लहर

मंगलवार दिनांक २१ मई को डॉ० रामप्रकाश जी ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ विश्वविद्यालय पहुंचकर कार्यभार ग्रहण कर लिया। पदभार ग्रहण करने से पूर्व विश्वविद्यालय परिसर में यज्ञ का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के कार्य को यज्ञ के ब्रह्मा की तरह निभाने का प्रयत्न करूँगा–डॉ० रामप्रकाश

इस अवसर पर आयोजित समारोह में बोलते हुए डॉ० रामप्रकाश ने कहा– 'शिक्षा का स्तर सम्पूर्ण भारत में अधोगति को चला गया है, गुरुकुल ही नहीं दिल्ली विश्वविद्यालय का नाम विश्व के टॉप २०० विश्वविद्यालयों सूची में कहीं नहीं आता।' यह दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा आज श्रेष्ठ शोध कार्यों की कमी है। जब तक कि शोध पत्र अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका में न छपे और उसे अन्य विद्वानों द्वारा उद्धृत न किया जाए वह शोध कार्य नहीं कहा जा सकता। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा कि केवल

www.thearyasamaj.org

कागज काले करने से शोध नहीं हो जाता । उन्होंने कहा कि सभी शोधार्थियों के लिए आवश्यक है कि वे अपने कार्य स्थल पर कार्य करें, ताकि नव शोध हो सके ।

गुरुकुल में अंग्रेजी तो हो लेकिन वैदिक संस्कृति पर अंग्रेजी हावी न हो

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की उन्नति के लिए तीनों आर्य प्रतिनिधि सभाओं और समस्त शिक्षक, शिक्षकोत्तर कर्मचारियों को मिलकर कार्य करना होगा । उन्होंने कहा कि हमारे मतभेद तो हो सकते हैं किन्तु मनभेद नहीं होने चाहिए । उन्होंने स्पष्ट कहा कि हमें महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी के मार्गदर्शन में कार्य कर आर्य सिद्धान्तों का पालन करते रहना चाहिए । गुरुकुल में अंग्रेजी तो हो लेकिन वैदिक संस्कृति पर अंग्रेजी हावी न हो । मैं खुले दिल से गुरुकुल में आया हूँ । गुरुकुल की उन्नति के लिए मैं कुछ कर सकूँ तभी मेरा कुलाधिपति बनना सार्थक होगा । उन्होंने कहा हमें अपने तन और मन दोनों स्वस्थ करने होंगे ।

संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए नव निर्वाचित कुलाधिपति डॉ० रामप्रकाश ने कहा कि सबसे पहले विश्वविद्यालय के खराब हो चुके सिस्टम को सुधारेंगे । उन्होंने कहा अब तक हुई अनियमितताओं की जानकारी मिलने के बाद दोषियों पर कार्यवाई की जाएगी । उन्होंने आगे कहा गुरुकुल की समस्त भूमि एवं एवं अन्य सम्पत्तियों की रक्षा करने में वह कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे । उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के पुराने हो चुके पाठ्यक्रम को ऐक्सपर्ट के माध्यम से रिवाइज कराकर सुधार किया जाएगा और नए पाठ्यक्रमों को शुरू कराने पर जोर दिया जाएगा ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने कहा कि डॉ० रामप्रकाश आर्यसमाज के समर्पित कार्यकर्त्ता हैं, हमेशा गौरक्षा आदि आन्दोलनों में आगे रहे हैं वे गुरुकुल को आगे ले जाएंगे ।

आर्यसमाज के उद्देश्यों को पूर्ण करने में सक्षम होगा विश्वविद्यालय– ब. राज सिंह आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी कहा कि दिल्ली, हरियाणा और पंजाब सभा के प्रधानों ने एक मत से डॉ. रामप्रकाश की नियुक्ति की है । हमें गुरुकुल विश्वविद्यालय को तो आगे ले जाना ही है साथ ही कांगड़ी ग्राम स्थित पुण्यभूमि का पुनरुद्धार भी करना है । हम वहां आर्य समाज के ऐसे धर्मोपदेशक तैयार करेंगे जो पूरे विश्व में आर्य पताका फहराएंगे । उनहोंने कहा कि हमें सब प्रकार के मन-मुटाव दूर कर सकारात्मक रूप से कार्य करना है ।

एकमत होकर आर्यसमाज के साथ–साथ विश्व विद्यालय एवं फार्मेसी की उन्नति करेंगे –आचार्य विजयपाल

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान एवं एम. डी. एच. मसाले के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि डॉ० रामप्रकाश के नेतृत्व में विश्वविद्यालय चहुंमुखी वृद्धि करेगा

www.thearyasamaj.org

। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पं. सुदर्शन शर्मा ने कुलपति के माध्यम से अपने सन्देश में कहा कि विश्वविद्यालय की उन्नति के लिए हम सब मिलकर कार्य करेंगे।

डॉ० रामप्रकाश जी के नेतृत्व में चहुँमुखी उन्नति करेगा विश्वविद्यालय
-महाशय धर्मपाल, चेयरमैन, एम., डी. एच.

कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापित किया । कार्यक्रम का संचालन कुलसचिव प्रो. ए. के. चोपड़ा ने किया । समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के उप प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार, दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, उप प्रधान ,आर्य प्रतिनिधि श्री शिवकुमार मदान, मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा, मन्त्री श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता, मन्त्री श्री सुखवीर सिंह आर्य, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल, आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री, प्रो. जयदेव वेदालंकार, प्रो. भारत भूषण, डॉ. राजकुमार रावत, सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जयप्रकाश विद्यालंकार सहित विभिन्न आर्यसमाजों के प्रतिनिधि एवं विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, कर्मचारी एवं छात्र उपस्थित थे । **श्री विनय आर्य,** महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

दूरभाष : ९९५८१७४४४१

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद का चुनाव
आर्य समाज फरीदाबाद, सेक्टर १९, हरियाणा में सम्पन्न

गत १४ जुलाई रविवार को आर्य भजनोपदेशक परिषद की कार्यकारिणी एवं पदाधिकारियों के चुनाव यज्ञ सत्संग के पश्चात् निर्वाचन अधिकारी आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् डॉ सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) ने निम्नलिखित प्रकार से करायें ।

प्रधान : श्री सत्यपाल 'मधुर' (दिल्ली)

उप प्रधान : श्री सहदेव बेधड़क (हरियाणा), श्री योगेश आर्य (बिजनौर)

महामन्त्री : डॉ. कैलाश 'कर्मठ' (कोलकाता)

उपमंत्री : श्री उपेन्द्र आर्य (चण्डीगढ़), श्रीमती सुरेश आर्या (दिल्ली)

कोषाध्यक्ष : श्री नरेशदत्त आर्य (बिजनौर)

लेखा परीक्षक : श्री त्रियुगी नारायण पाठक

संरक्षक : स्वामी प्रणवानन्दजी (दिल्ली), डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)

कार्यकारिणी सदस्य : श्री बेगराज आर्य, श्री बृजपाल कर्मठ, श्री हरिसिंह आर्य (गादोज), श्री नरेश निर्मल, श्री सत्यपाल सरल, श्रीमती सुलभा शास्त्री, श्री कुलदीप आर्य, श्री ज्ञानेन्द्र तेवतिया, श्री नारायण सिंह आर्य ।

विशेष आमंत्रित अंतरंग सदस्य : श्री उदयवीर आर्य, श्री सत्यप्रकाश आर्य

www.thearyasamaj.org

एक पत्र

श्री आदित्य मुनि 'वानप्रस्थ'

सन्दर्भ—**आर्यसंसार (कोलकाता) के जून, २०१३ के अङ्क में प्रकाशित श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक' का उक्त विषयक लेख**

(सैद्धान्तिक विषयों में विचारों में विभिन्नता होती ही रहती है । आदरणीय श्री आदित्य मुनि जी वानप्रस्थ का यह पत्र श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक' जी के लेख के सम्बन्ध में है । हम विद्वानों के विचारों का स्वागत करेंगे । विचारों से सहमत होना हमारी बाध्यता नहीं है । —सम्पादक)

आदरणीय वैदिक जी, सादर नमस्ते !

आपका २६ जनवरी, २०१२ का पोष्टकार्ड पत्र मिला था । तदन्तर आज यह पत्र लिख रहा हूँ। आपने अपने उक्त लेख में लिखा है कि 'जहाँ तक मानव उत्पत्ति का प्रश्न है तो सृष्टि की आदि में एक ऐसे मानव उत्पादक नर-मादा के रूप में प्राणी उत्पन्न हुए जो पशु जैसे चलते-चलते क्रमशः खड़े होकर चलने लगे । उनसे कुछ बुद्धिमान मझोले शरीर वाले थे । परन्तु जिन प्राणियों से विकसित होकर मानव-मानवी उत्पन्न हुए , उन्हें कोई देखने वाला नहीं हुआ और न वे जीवित रहे, वे विशेष प्राणी लुप्त हो गए, उनका जन्म केवल मानव को उत्पन्न करने के लिए ही दैवीशक्तियों के द्वारा हुआ था ।'

मैं समझता हूँ आपकी मानव उत्पत्ति विषयक उक्त धारणा डार्विन के विकासवाद से अनुप्राणित है जिसका खण्डन ऋषि दयानन्द ने रुड़की (सहारनपुर) में अपने प्रवचनों में किया था । ऋषि दयानन्द ने तो अपने सिद्धान्त ग्रन्थ **'सत्यार्थप्रकाश'** में प्रतिपादित किया है । मानवों की आदि अमैथुनी सृष्टि त्रिविष्टप (तिब्बत) में हुई थी जहाँ आदि मानव अनेक युवक-युवतियों के रूप में उत्पन्न हुए थे ताकि आगे उनसे मैथुनी सृष्टि चल सके । इन्हीं में से चार पुरुष-ऋषि (अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा) थे जिनके माध्यम से परमात्मा ने इनको क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान दिया । तब प्रश्न उत्पन्न होता है कि ये आदि मानव (युवक-युवतियाँ) आपके द्वारा कल्पित मानव उत्पादक नर-मादा की ही सन्तान थे ? यदि थे तो वे अमैथुनी कैसे रहे ? क्या वे ईसाइयों के ईसामसीह के समान बिना माता-पिता के संयोग से ही उत्पन्न हुए थे ? आप कहते हैं कि इन मानव उत्पादक नर व मादा को देखने कोई भी नहीं था । यदि ऐसा है तो क्या वे केवल दो ही (नर-मादा) उत्पन्न हुए जो उन्हें देखने वाला तीसरा कोई नहीं था तो उनकी सन्तानें आगे परस्पर भाई व बहिन ही तो हुई । फिर जब उन्हें किसी न देखा ही नहीं था तो आज आपको यह बात भी कैसे ज्ञात हुई ? क्या जो परमात्मा मानव उत्पादक नर मादा के रूप में प्राणी उत्पन्न कर सकता (जो पहले खड़ा होकर चल भी नहीं पाता था) वही परमात्मा ऋषि दयानन्द की मान्यतानुसार युवक-युवती (अमैथुनी-स्त्री-पुरुष) अधिक संख्या में एक से अधिक स्थानों पर एक साथ उत्पन्न नहीं कर सकता था ताकि उपर्युक्त कथित दोष न हों ।

आशा है विस्तृत उत्तर देकर हमें और आर्य संसार पत्र को उपकृत करेंगे । भवदीय :

(आदित्यमुनि वानप्रस्थ) सम्पर्क सूत्र मु० पो० मुरारई-७३१२१९, जिला वीरभूम (प० बंगाल) मो० ०९४२५६०५६२

www.thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

श्रावणी उपाकर्म एवम् वेद प्रचार सप्ताह

मान्यवर !

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्य समाज कलकत्ता द्वारा आयोजित **श्रावणी उपाकर्म एवं वेद प्रचार सप्ताह** आगामी श्रावण पूर्णिमा बुधवार २१ अगस्त २०१३ से **श्री कृष्ण जन्माष्टमी** बुधवार २८.अगस्त २०१३ पर्यन्त आपके अपने **आर्य समाज मन्दिर** में उत्साह पूर्वक मनाया जाएगा । इस शुभ अवसर पर प्रतिदिन प्रातः ७ बजे से ९.३० बजे तक **यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवम् उपदेश** तथा सायंकाल ७.३० से ९ बजे तक भजन **श्रीमती अंजु सुमन (समस्तीपुर)** एवं **वेद-कथा आचार्य डा० शिवदत्त पाण्डेय जी** (सुल्तानपुर) द्वारा होगा ।

दिनांक २५ अगस्त २०१३ रविवार को प्रातः १० बजे से एक **वेद संगोष्ठी** तथा २८ अगस्त २०१३ दिन बुधवार को **प्रातः ९ बजे से यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति एवं सायं ७ बजे से ९ बजे तक श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व** मनाया जायेगा ।

सादर अनुरोध है कि समस्त कार्यक्रमों में आप सपरिवार पधार कर आयोजन को सफल बनावें ।

श्रावणी महापर्व पर वेद कथा के विषय

(सायंकालीन सत्र)

२१ अगस्त : श्रावणी पर्व का महत्व, संस्कृत रक्षा दिवस के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा का महत्व

२२ अगस्त : वेदोक्त शिक्षा व्यवस्था ।

२३ अगस्त : वेदोक्त परिवार व्यवस्था ।

२४ अगस्त : वेदोक्त सामाजिक व्यवस्था ।

२५ अगस्त : वेद संगोष्ठी–प्रातः १० बजे से १ बजे तक– विषय–वेद मन्त्रों का वास्तविक अर्थ और कर्मकाण्ड में उनका विनियोग ।

२५ अगस्त : वैदिक शासन व्यवस्था एवं राष्ट्रधर्म (सायंकालीन सत्र)

२६ अगस्त : व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयाम ।

२७ अगस्त : वेदोक्त त्रैतवाद सिद्धान्त ।

२८ अगस्त : योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्म जयन्ती

विषय—गीता में उक्त वैदिक सिद्धान्तों का प्रामाणिक विवेचन—महाभारत और पुराणोक्त श्रीकृष्ण के चरित्र की तुलनात्मक समीक्षा —गीता उक्त योग के सिद्धान्त और योगदर्शन का योग ।

आमंत्रित वेद विद्वान् : आचार्य पं० शिवदत्त पाण्डेय (सुल्तानपुर, उ० प्र०)

एवं भजनोपदेशिका : विदुषी बहन श्रीमती अंजु सुमन 'कवियित्री'

अन्तर्विद्यालय देश भक्ति गीत प्रतियोगिता–रविवार, १८ अगस्त २०१३ प्रातः १० बजे से

मनीराम आर्य
प्रधान

सत्य प्रकाश जायसवाल
मन्त्री

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए पं० उमाकान्त उपाध्याय, एम०ए० द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित । मो. : ९८३०३७०४६३